भाग – 5

‘जनविकल्प’ में प्रकाशित सामग्री की सूची

जनवरी, 2007

देशकाल
सामाजिक न्याय की सत्ता संस्कृति
- अनिल चमड़िया

एक नायक का पतन
- अभय मोर्य

बिहार में पंचायत चुनाव : महिला मुक्ति के सवाल
- भारती एस कुमार

साक्षात्कार
अरुण कमल -
'साहित्य प्रायः उनका पक्ष लेता है जो हारे हुए हैं'

अध्ययन कक्ष
प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था और भाषा
- राजू रंजन प्रसाद

बहुजन नजरिए से 1857 का विद्रोह
- कंवल भारती

- जीवकांत की चार कविताएं

आलोचनात्मक हस्तक्षेप की आवश्यकता
- राजकुमार राकेश

उर्दू शब्दों के इस्तेमाल में नासमझी
- फ़ज़ल इमाम मल्लिक

पुस्तक-चर्चा

कट्टरवादी दृष्टि से किताब का पाठ

- मुशर्रफ़ आलम ज़ौकी

कविता-पुस्तिका

- जनविकल्प के उद्घाटन अंक जनवरी, 2007 के साथ 24 पृष्ठों की कविता पुस्तिका 'यवन की परी' प्रकाशित हुई थी, जिसमें एक अनाम कवयित्री की लंबी कविता व उससे संबंधित रति सक्सेना की कविता व टिप्पणी संकलित थी।

फरवरी, 2007

समकाल
विश्व : सद्दाम के बाद
- जुबैर अहमद भागलपुरी

साक्षात्कार
विपिन चन्द्र
'भूमंडलीकरण को स्वीकार करना ही होगा'

अध्ययन कक्ष
धर्म की आलोचना की आलोचना
- अशोक यादव

याद
और एक स्कूल का अंत हो गया
- राजू रंजन प्रसाद

कमलेश्वर
- राजेन्द्र यादव

मतांतर
मनोरोग से जुड़े अंधविश्वासों पर चोट करती कविता
- विनय कुमार

ज्ञानेन्द्रपति की चार कविताएं

मार्च, 2007

समकाल

गणतंत्र के अंकुर के बीच मधेशियों का जायज विरोध
- पंकज पराशर

संविधान पर न्यायपालिका के हमले के खिलाफ
- शरद यादव

सच्चर रिपोर्ट की खामियां
- शरीफ कुरैशी

विदेश भक्त एम्स
- मुसाफिर बैठा

पार्टनर आपकी पक्षधरता क्या है?
- प्रमोद रंजन

जनसत्ता, रूपकवंर प्रसंग और फिर से एक सती संदर्भ
- अविनाश

अध्ययन कक्ष

ऋग्वैदिक भारत और संस्कृत : मिथक एवं यथार्थ
- राजेन्द्रप्रसाद सिंह

गरिमा की अर्थव्यवस्था
- गाई सोमां

धरोहर

जाति और योनि के दो कटघरे
- डा. राममनोहर लोहिया

अछूत समस्या
- भगत सिंह

पुस्तक चर्चा
प्रेमचंद की दलित कहानियां
- धीरज कुमार नाइट

अप्रैल, 2007

समकाल

नंदीग्राम : विकास का खूनी खेल
- रेयाज-उल-हक/सुनील

उत्तर प्रदेश का कुरूक्षेत्र
- विद्याभूषण रावत

फौजी शासन के निशाने पर न्यायपालिका और मीडिया
- पंकज

दवाएं और मंत्री की घोषणा
- अनिकेत

सर्वोच्च न्यायालय की सक्रियता पर सवाल
- स्वतंत्र मिश्र

तुर्कमेनिस्तान का अनिश्चित भविष्य
- पंकज पराशर

साक्षात्कार

यह सीधे-सीधे युद्ध है...
- अरुंधती राय

अध्ययन कक्ष

बौद्ध दर्शन के विकास व विनाश के षड़यंत्रों की साक्षी रही पहली सहस्राब्दी
- डा. तुलसी राम

धरोहर
गुलामगिरी
- जोतीराव फुले

इंटरनेट से
क्रिकेट कथा वाया मीडिया
- उमाशंकर सिंह

फिल्म
काबुली वाले के देश में
- फ़ज़ल इमाम मल्लिक

मई, 2007

समकाल
फिर उभरा फासीवादी जिन्न
- स्वतंत्र मिश्र

सुशासन : टोटकातंत्र युग का नया फंडा
- राजकुमार राकेश

हाशिये के लोग और पंचायती राज अधिनियम
- लालचंद ढिस्सा

बांग्लादेश में सैनिक सत्ता
- पंकज पराशर

उपभोक्तावाद और परिवार
- प्रमोद रंजन

मार्क्स को याद करते हुए
- राजू रंजन प्रसाद

कविता
- सुरेश सलिल

साक्षात्कार
योगेन्द्र यादव
जाति केवल मानसिकता नहीं

सीताराम येचुरी
वैश्वीकरण के साथ खास तरह के संवाद की जरूरत

इंटरनेट से

क्या कानून जजों के लिए नहीं?

- सत्येंद्र रंजन

आलेख

दण्डकारण्य : जहां आदिवासी महिलाओं के लिये जीवन का रास्ता युद्ध है

- आदिवासी महिला मुक्ति मंच

जून, 2007

साक्षात्कार

हम जनता के लामबंदी में यकीन रखते हैं
- माओवादी नेता गणपति

समकाल

अमेरिकी हित बैंक?
- पंकज पराशर

प्रवास और अर्थव्यवस्था का संकट
- रेयाज-उल-हक

पानी विश्वयुद्ध नहीं, गृहयुद्ध का कारण बनेगा
- सचिन कुमार जैन

जातिवाद का घिनौना खेल
- अजय कुमार सिंह

राजनीति का मोहरा बना धर्म
- जसपाल सिंह सिद्धू

ब्राह्मण-जाल में माया
- कंवल भारती

धर्म का असली धंधा
- स्वतंत्र मिश्र

गुटीय संघर्ष और शांति वार्ता
- दिनकर कुमार

जनयुद्ध और दलित-प्रश्न
- कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी)

कविता
- नागार्जुन
- रवीन्द्र स्वप्निल प्रजापति

धरोहर
आपातकाल : एक डायरी
- विशन टंडन

जुलाई, 2007

समकाल

सिर पर मैला ढोने की प्रथा
- ज्ञानेश्वर शंभरकर

अंतरिक्ष की धर्म यात्रा
- मुसाफिर बैठा

मौत के कगार पर बनारस के बुनकर
- वसीम अख्तर

राष्ट्रपति चुनाव : परंपराओं का विध्वंस
- रजनीश

ईसाइयों के विरुद्ध हिंसा
- राम पुनियानी

भारत-अमेरिका परमाणु समझौता
- पंकज पराशर

जनयुद्ध और दलित प्रश्न II
- सी.पी.एन. (माओवादी)

बोरिस येल्तसिन के बहाने
- अनीश अंकुर

नया ज्ञानोदय : ताअज़ीम के मेआंर परखने होंगे
- प्रमोद रंजन

कविता
- दिनकर कुमार

आयोजन
व्याख्यान : अयोध्या प्रसाद खत्री
- राजीवरंजन गिरि

रपट -अरुण नारायण

पुस्तक चर्चा
समय मुर्दागाड़ी नहीं होता
- राजू रंजन प्रसाद

साक्षात्कार
यह भारतीय इतिहास का निर्णायक समय है
- माओवादी नेता गणपति

- *वीरेन नंदा*

अगस्त, 2007

समकाल

माइक थेवर को जानना जरूरी है
- रवीश कुमार

शिक्षा की जाति
- मुसाफिर बैठा/प्रदीप अत्रि

बजट व्यवस्था अधिनियम
- अमित भादुरी

मानवाधिकार आंदोलन की प्रतीक शर्मिला चानू
- दिनकर कुमार

इंतजार था जिसका ये वो सहर तो नहीं
- पंकज पराशर

आज के तुलसीगण
- प्रमोद रंजन

व्यवस्था बहुत कम शब्दों को जानती है
- राजूरंजन प्रसाद

मुक्ति-संघर्ष के दो दस्तावेज
- रेयाज-उल-हक

शांति प्रक्रिया का परिप्रेक्ष्य
- राम पुनियानी

15 अगस्त का सन्नाटा
- अनीश अंकुर

साक्षात्कार
संजय काक
'पांच सौ वर्ष पुराना है कश्मीर की गुलामी का इतिहास'

अमर्त्य सेन
'प्रायः मानवीय मुद्दों को नजरअंदाज कर दिया जाता है'

कविता
- उद्‌भ्रांत

घरोहर
मध्ययुगीन भक्ति-आन्दोलन का एक पहलू
- मुक्तिबोध

सितंबर, 2007

समकाल

मैं बौद्ध धर्म की ओर क्यों मुड़ा?
- लक्ष्मण माने

सामाजिक जनतंत्र के सवाल
- प्रफुल्ल कोलख्यान

पाकिस्तान में लोकतंत्र की सुगबुगाहट
- पंकज पराशर

नामकरण के निहितार्थ
- एल एस हरदेनिया

डॉक्टर कैद में है
- अजय प्रकाश

सब्सिडी, आरोप और अश्लील आवाजों की (अ)राजनीति
- आदित्य शर्मा

नदियों का प्रतिशोध
- गुलरेज़ शहज़ाद

मंडल, कमंडल और भूमंडलीकरण
- मृत्युंजय प्रभाकर

खबरों का अकाल
- स्वतंत्र मिश्र

अंधविश्वास का पुल
- मुसाफिर बैठा

तस्लीमा और उदारवादी मूल्य
- राम पुनियानी

भाषाशास्त्री राजमल बोरा
- राजेन्द्रप्रसाद सिंह

कविता
- विष्णुचन्द्र शर्मा

धरोहर
बुद्धिजीवी की भूमिका
- एडवर्ड सईद

अक्टूबर, 2007

समकाल

राजापाकर कांड
- रजनीश उपाध्याय
- अनीश अंकुर
- नरेन्द्र कुमार
- गुलरेज़ शहज़ाद
- डा. विनय कुमार

उत्तर भारत में पिछड़ावाद
- दिलीप मंडल

यूरेनियम खनन पर घमासान
- दिनकर कुमार

शिक्षा के सार्वजनिकरण की चुनौतियां
- अशोक सिंह

जहर का भूमंडलीकरण
- सचिनकुमार जैन

परमाणु संधि के निहितार्थ
- अभिषेक श्रीवास्तव

ब्राह्मणवाद की पुनर्स्थापना का षडयंत्र
- प्रमोद रंजन

संविधान है राष्ट्रीय धर्मशास्त्र
- राम पुनियानी

एक मिथक का पुनर्पाठ
- प्रेमकुमार मणि

पेरियार की दृष्टि में रामकथा
- सुरेश पंडित

रामकथा के विविध रूप
- रामधारीसिंह दिनकर

कविता
- पंकज कुमार चौधरी
- निलय उपाध्याय
- वसंत त्रिपाठी
- मुसाफिर बैठा

साक्षात्कार
सुधीर चंद्र
भारतीय इतिहास लेखन मार्क्सवादी नहीं, राष्ट्रवादी है

पुस्तक चर्चा
गांधी का दलित विमर्श
- कंवल भारती

नक्सबाड़ी का दौर वाया फिलहाल
- राजीवरंजन गिरि

दिसंबर, 2007-मार्च, 2008
(साहित्य वार्षिकी)

कहानियां

गली के मोड़ पे
- संजीव

पास-फेल
- संतोष दीक्षित

हंगर फ्री इंडिया
- विमल कुमार

समानांतर
- कविता

आबो-हवा
अरविंद शेष

हमन को होशियारी क्या
- रणेन्द्र

ज्ञान विकार है
- गुरदयाल सिंह

विद्रोह
- बाबुराव बागुल

प्यास
- मोहनदास नैमिशराय

यह भी युद्ध है
- राजकुमार राकेश

बसंती बुआ
- अनन्तकुमार सिंह

आखिरी औरत
- शेखर मल्लिक

लेख

उत्तरआधुनिकता और हिंदी का द्वंद्व
- सुधीश पचैरी

आधुनिक हिन्दी की चुनौतियां
- अरविंद कुमार

हिंदी में आत्म-आलोचना का अभाव है
- जवाहरलाल नेहरू

साक्षात्कार

राजेंद्र यादव : प्रतिभा आपको अकेला कर देती है

उपन्यास अंश

शब्द-सत्ता
- श्यामबिहारी श्यामल

कविताएं

- संजय कुंदन
- आर. चेतनक्रांति
- सुंदरचंद ठाकुर
- पवन करण
- कुमार अरुण

- कुमार मुकुल
- मधु शर्मा
- प्रियदर्शन
- विनय कुमार
- मदन कश्यप
- शंकर प्रलामी
- बसंत त्रिपाठी
- अरुण आदित्य
- बाबुराव बागुल
- ज्ञानेंद्रपति
- चंद्रकान्त देवताले
- विष्णु नागर
- भगवत रावत
- विजेंद्र
- अनूप सेठी
- नीलाभ
- खगेंद्र ठाकुर
- रवीन्द्र स्वप्निल प्रजापति
- प्रमोद रंजन
- मुसाफिर बैठा
- पंकज पराशर
- मृत्युंजय प्रभाकर
- रोहित प्रकाश
- रमेश ऋतंभर
- शहंशाह आलम
- आशीष कुमार
- अजेय
- प्रणय प्रियंवद
- मोहन साहिल
- कल्लोल चक्रवर्ती
- विक्रम मुसाफिर
- लनचेनबा मीतै